ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

स्वैच्छिक संगठन की निर्भया आंदोलन में भूमिका

श्री सत्येन्द्र

असिस्टेंट प्रोफेसर, समाज कार्य विभाग, वनस्थली विद्यापीठ–304022

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 24 May 2018

Keywords
बलात्कार पीड़िता, स्वैच्छिक संगठन

ABSTRACT

स्वैच्छिक संगठन वे गैर–सरकारी औपचारिक संगठन हैं, जो सामान्यतः स्वेच्छा से सामाजिक बदलाव हेतु कल्याणकारी कार्य सम्पादित करते हैं। स्वैच्छिक संगठन भारतीय परिप्रेक्ष्य में औपचारिक रूप से बहुत बाद में अस्तित्व में आए, लेकिन भारत में स्वैच्छिक कार्य सदैव से विद्यमान रहे भारत में वर्तमान में करीब 12 लाख स्वैच्छिक संगठन सक्रिय हैं, जो अनेक प्रकार की भूमिकाओं एवं उत्तरदायित्वों का निर्वाह कर रहे हैं।शोधार्थी ने प्रस्तुत अध्ययन में स्वैच्छिक संगठनों के मुख्य अधिकारियों से अनौपचारिक साक्षात्कार किया और स्वैच्छिक संगठनों की निर्भया आंदोलन में भूमिका की सामाजिक आंदोलनों की सैद्धांतिकी के परिप्रेक्ष्य में पड़ताल की है।

भारत में स्वैच्छिक संगठन

स्वैच्छिक कार्य एवं स्वैच्छिक संगठनों का भारतीय सामाजिक परम्परा से अटूट संबंध है। भारत में स्वैच्छिक कार्यों एवं विभिन्न संगठनों की स्वैच्छिक कार्यों में भूमिका औपनिवेशिक काल में ही आरंभ हो गई थी। इन संगठनों में आर्य समाज, ब्रह्मसमाज, रामकृष्ण मिशन इत्यादि का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इन सभी संगठनों के विषय में यह कहा जा सकता है कि ये संगठन धार्मिक भावना से अनुप्राणित थे परन्तु सामाजिक सुधारों की दिशा में भी उन्होंने उल्लेखनीय योगदान दिया।

स्वतंत्रता के पश्चात भारत में गांधीवादी संगठन सक्रिय हुए। जिसके प्रभाव से स्वैच्छिक संगठनों ने गांधीवादी विचारधारा का अनुकरण करते हुए सामाजिक बदलाव का प्रयास किया। 1960 के दशक में बहुत से युवक साक्षरता, सिंचाई, स्वास्थ्य, न्यूनतम मजदूरी, भूमि और आवास अधिकारों जैसे मुद्दों पर कार्य करने के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में गए। स्वैच्छिक सेवा क्षेत्र में कार्य करने वाले इन लोगों की विचारधारा गांधीवादी, लोहियावादी, मार्क्सवादी, नारी स्वातंत्रवादी थी।’’[3]

1960–70 के दशकों विभिन्न आंदोलनों जैसे गांधीवादी, लोहियावादी, पब्लिक वार ग्रुप इन सभी आंदोलनों को केन्द्र में रखकर आंदोलनों को संचालित किया गया। इनमें से अधिकांश का झुकाव वामपंथी था। भारत में वर्तमान में करीब 12 लाख स्वैच्छिक संगठन सक्रिय हैं, जो अनेक प्रकार की भूमिकाओं एवं उत्तरदायित्वों का निर्वाह कर रहे हैं।

प्रस्तुत अध्ययन में उन स्वैच्छिक संगठनों को अध्ययन में शामिल किया गया है जो सामाजिक आंदोलन को उपकरण के रूप में प्रयोग कर सामाजिक बदलाव लाते हैं और जिन्होंने निर्भया आंदोलन में अहम भूमिका निभाई है। इस प्रकार (आंदोलन आधारित) के संगठनों को नागरिक समाज संगठन की संज्ञा दी जाती है। निर्भया आंदोलन से पूर्व भी ये संगठन भी समाज में महिला सुरक्षा हेतु अति महत्वपूर्ण कार्य किए गये। जिसके परिणामस्वरूप बलात्कार जैसे जघन्य अपराध सार्वजनिक विमर्श का केन्द्र बने।

साहित्य पुनरावलोकन

शाह, मिहिर (2014) ने ‘इक्नॉमिक एण्ड पोलिटिकल विकली’ वाल्यूम–49, इश्यू–8, 22 फरवरी, 2014 में प्रकाशित लेख में वर्णित किया कि नागरिक समाज भारत में सामाजिक परिवर्तन के एंजेट के रूप में कार्य करता है। उन्होंने नागरिक समाज के अंतर्गत धार्मिक संघ, गैर सरकारी संगठन, उद्योग संघ, मीडिया के द्वारा शामिल किया है। उन्होंने नागरिक समाज को चार भागों में बांटा है जिसमें इसका प्रथम प्रकार (1) करूणा एवं दान आधारित संगठन, (2). गैर सरकारी संगठन, (3). वकालत आधारित संगठन, (4). राज्य आधारित संगठन। जिन्होंने नागरिक समाज के विभिन्न प्रकार और उनकी भारत में भूमिका का वर्णन है।**सिंह, रिचा (2014)** ने अपने लेख ‘सिविल सोसायटी एण्ड पॉलिसी मेकिंग इन इण्डियाः इन सर्च ऑफ डेमोक्रेटिक स्पेस’ ए केस स्टडी में नागरिक समाज की भूमिका का सूचना का अधिकार लागू करवाने, नागरिक समाज तथा योजना आयोग के 12वीं पंचवर्षीय योजना का प्रभाव का अध्ययन करने में तथा नागरिक समाज की अन्ना हजारे आंदोलन में भूमिका का वर्णन किया है। उक्त अध्ययन में सिंह ने यह तथ्य प्रस्तुत किया कि नागरिक समाज भ्रष्टाचार मुक्ति एवं पारदर्शिता के लिए क्रियाशील हो जाता है। उक्त अध्ययन में उन्होंने सूचना के अधिकार, 12वीं पंचवर्षीय योजना लागू करने एवं अन्ना हजारे आंदोलन में नागरिक समाज की भूमिका की केस स्टडीज के रूप में प्रस्तुत किया। **भाविष्कार, बी.एस. (2001)** ने अपने सोश्योलॉजीकल बुलेटिन में प्रकाशित लेख ‘एन.जी.ओ. एण्ड सिविल सोसायटी इन इण्डिया’ में नागरिक समाज एवं गैर सरकारी संगठनों के उद्भव पर प्रकाश डालते हुए उल्लेख

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

किया कि गैर सरकारी संगठन 80 के दशक में उभर कर सामने आए। उन्होंने इनकी महत्ता पर प्रकाश डालते हुए वर्तमान में विकासात्मक, अनुसंधान, क्रियात्मक कार्यों जिसमें नर्मदा बचाओं, जल संग्रहण, महिला समूह इत्यादि के माध्यम से उनके योगदान पर चर्चा करते हैं। अपने अध्ययन में यह तथ्य प्रस्तुत किए कि नैतिक तौर पर विभाजित देशों में नागरिक समाज, सामाजिक आंदोलन एवं राज्य के बीच में संबंधों पर चर्चा करते हुए बताते हैं कि जब इस प्रकार के सामाजिक आंदोलन होते हैं तब विपक्षी पार्टियों के द्वारा मध्यम वर्ग से संगठित नागरिक समाज के साथ संबंध स्थापित किए जाते हैं तथा वहाँ पर सत्ता परिवर्तन करने में अहम् योगदान देते हैं।

प्रस्तुत अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य

निर्भया आंदोलन के विशेष संदर्भ में स्वैच्छिक संगठनों की भूमिका का अध्ययन करना।

अध्ययन प्रविधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली का चयन किया गया है क्योंकि निर्भया आंदोलन का मुख्य केन्द्र प्रमुख रूप से दिल्ली था। यद्यपि देश के विभिन्न शहरों में इस मुद्दे पर व्यापक विरोध प्रदर्शन हुए परन्तु वे अत्यंत अल्पकालिक थे। निर्भया आंदोलन में स्वैच्छिक संगठनों ने भाग लिया था स्वैच्छिक संगठन स्वैच्छिक संगठनों के नेतृत्वकर्ता के लिए असंरचित साक्षात्कार का प्रयोग किया गया है। शोधार्थी ने उक्त संगठनों में उच्च पद पर आसीन अधिकारियों से साक्षात्कार के माध्यम से तथ्य संकलन किया तथा उनके कथन को कथनात्मक के रूप में अध्ययन में शामिल किया गया है तत्पश्चात् उसका वर्णनात्मक विश्लेषण किया गया है।

भारत में बलात्कार को एक जघन्य अपराध माना गया है, जिसके लिए भारतीय दण्ड संहिता में सजा का प्रावधान किया गया है। जिसमें मृत्यु दण्ड तक का प्रावधान है, देश में महिला सुरक्षा को लेकर अनेक संवैधानिक, वैधानिक एवं केन्द्र एवं राज्य सरकार की नीतियाँ एवं योजनाएँ भी हैं, मीडिया एवं पुलिस प्रशासन भी है फिर भी भारत में प्रतिवर्ष लगभग 24,913 बलात्कार केस दर्ज हुए (क्राइम ब्यूरो ऑफ इण्डिया, 2013 आंकड़ा)[9] निर्भया बलात्कार में ऐसा क्या था कि इतने बड़े आंदोलन के रूप में परिवर्तित हुआ–

''दिल्ली में जो बच्ची के साथ घटना घटी वह बड़ी दुखद थी, जिससे संपूर्ण राष्ट्र अत्यंत दुखी था। इसमें कोई संदेह नहीं है कि देश में अन्य स्थानों पर भी बलात्कार होते हैं जिसका वहाँ पर भी विरोध होता है। यह अलग केस इसलिए बन गया क्योंकि यह घटना दिल्ली में घटित हुई जिसके कारण यहाँ स्थित विश्वविद्यालयों के छात्रों में भी इसका विरोध किया और मीडिया के माध्यम से इसको फैलाने का कार्य किया।''

साक्षात्कार–प्रतिनिधि एडवा, दिल्ली

''देश में अनेक स्थानों पर महिलाओं के साथ बलात्कार अथवा छेड़खानी जैसी घटना घटित होती है। भारत एक विशाल देश है एवं भौगोलिक रूप से भी अत्यंत विस्तृत है इसलिए कई स्थान ऐसे हैं जहाँ मीडिया पहुँच ही नहीं पाती है। इसलिए घटना का पता ही नहीं चलता है। यह घटना राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली की है जहाँ मीडिया सक्रिय रहता है इसलिए दिल्ली की घटना ने सामाजिक आंदोलन का रूप धारण किया।''

साक्षात्कार जागोरी संस्था, प्रतिनिधि, दिल्ली

''जहाँ तक, मुझे मालूम है, निर्भया घटना दिसम्बर, 2012 में घटित होती है, इससे पहले अरूणाचल प्रदेश, छत्तीसगढ़, दिल्ली, राजस्थान में बलात्कार के अनेक मामले सामने आए। लोगों में प्रशासन, सरकार के प्रति रोष था जिसके कारण आम जनता को लगने लगा की बदलाव का समय आ गया है, इसलिए आंदोलनकारियों के द्वारा भारी संख्या में भाग लिया।''

साक्षात्कार–एपवा संस्था

''निर्भया बलात्कार की घटना दिसम्बर में हुई, इससे पहले सीकर में एक नाबालिका के साथ घटना होती है वहाँ स्थानीय रूप से इसका विरोध किया गया, इसी प्रकार छत्तीसगढ़ में इसी प्रकार की घटना हुई, हरियाणा, उत्तर प्रदेश में नाबालिकाओं के साथ बलात्कार हुआ जिससे लोगों में गुस्सा था, जब मीडिया द्वारा बार–बार इस प्रकार की घटना को दिखाया जा रहा था जिसके प्रभाव के कारण लोग एकजुट होकर आंदोलन स्थल पर आए।''

साक्षात्कार–नेशनल फेडरेशन ऑफ इण्डिया विमन

विश्लेषण :

उपर्युक्त तथ्यों को विश्लेषित किया जाए तो यह स्पष्ट होता है कि निर्भया आंदोलन को सामाजिक एवं वृहत रूप प्रदान करने में अनेक कारक जिम्मेदार रहे, जिसमें दिल्ली में हुई घटना के अलावा राजस्थान, छत्तीसगढ़, अरूणाचल प्रदेश में भी बलात्कार की घटनाएँ हो चुकी थी जिसके कारण लोगों में अत्यंत रोष था। वहीं मीडिया के द्वारा भी घटना के प्रति संवेदनशीलता प्रकट की और इस घटना को मुख्य सुर्खियां प्रदान की, इसके अलावा निर्भया घटना दिल्ली में घटित होने के कारण यहाँ छात्रों ने इस घटना का घोर विरोध प्रकट किया जिसके कारण भी यह घटना एक आंदोलन का रूप धारण कर सकी। इस घटना ने जन सामान्य को इतना

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

उद्वेलित किया कि लोगों को लगने लगा था कि अब बदलाव की आवश्यकता है।

अतः उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि लोगों को लगा कि यह एक गंभीर समस्या है जिसका समाधान आवश्यक है और संभव भी है इसलिए लोग लामबंदी की स्थिति में आए। सामाजिक आंदोलनों की सैद्धांतिकी में यदि निर्भया आंदोलन की पड़ताल किया जाए तो यह स्पष्ट होता है कि संरचनात्मक तनाव सिद्धांत निर्भया आंदोलन पर लागू होता है। उक्त निर्भया आंदोलन को यदि संरचनात्मक तनाव सिद्धांत के परिप्रेक्ष्य में मूल्यांकित किया जाए तो स्पष्ट होता है कि इस आंदोलन में संरचनात्मक तनाव सिद्धांत पूर्णतः लागू होता है। उक्त आंदोलन में वो सभी लक्षण पाए जाते हैं जो संरचनात्मक तनाव सिद्धांत के हैं।

राष्ट्रीय स्तम्भ के क्रम संख्या चार में मीडिया को शामिल किया जाता है, मीडिया को 'देश का चौकीदार', 'देश का मिरर' इत्यादि के नाम से जाना जाता है, आम जन तक राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर खबर पहुँचाने का कार्य मीडिया के द्वारा किया जाता है। जिसके वर्तमान में तीन प्रकार–प्रिंट मीडिया, इलेक्ट्रोनिक मीडिया एवं सोशल मीडिया है। 'निर्भया' घटना एक सामाजिक व्यवस्था को प्रभावित करने वाली घटना है, जिसमें मीडिया की भूमिका अहम बन जाती है, इसलिए शोधार्थी ने प्रत्यक्ष रूप से उत्तरदाताओं से मीडिया की भूमिका की पड़ताल की गई है।

निर्भया आंदोलन में मीडिया की क्या भूमिका के बारे प्रतिक्रिया

"हम लोग निर्भया आंदोलन में न्याय की मांग कर रहे थे, जिनमें मुख्यमंत्री आवास, राष्ट्रपति भवन, इण्डिया गेट इत्यादि पर हम प्रदर्शन कर रहे थे जिसे प्रिंट मीडिया, इलेक्ट्रोनिक मीडिया एवं सोशल मीडिया ने इसे प्रस्तुति दी। टाइम्स ऑफ इण्डिया समाचार पत्र ने प्रथम पृष्ठ पर इस आंदोलन की घटना संबंधित लेख, मुझे स्वयं 'आज तक' चैनल बहस में बुलाया था तथा लगातार इस आंदोलन से संबंधित खबरे संचालित हो रही थीं। सोशल मीडिया पर विशेष रूप से यू–टयूब पर हमारी आंदोलन के समय हमारे साथियों ने रिकार्ड कर अपलोड किया गया। जिसमें हजारों की संख्या में लाइक मिले। जिसे प्रोत्साहित होकर प्रतिदिन हम अपनी गतिविधियों को सोशल मीडिया पर अपलोड किया गया। हम तो यह कहेंगे कि सोशल मीडिया, प्रिंट मीडिया एवं इलैक्ट्रॉनिक मीडिया सभी की अहम भूमिका रही थी।"

साक्षात्कार–प्रतिनिधि एपवा संस्था, दिल्ली

"वर्तमान समय में मीडिया समाज में अहम कड़ी का कार्य करते हैं। मैं यदि व्यक्तिगत अवलोकन के आधार पर बात करूं तो यही कहूंगी कि कहीं न कहीं मीडिया ने नेतृत्वकारी भूमिका का निर्वाह किया। समाचार पत्रों ने प्रतिदिन लगभग जब तक आंदोलन चला घटना को कवर किया गया, इलेक्ट्रोनिक मीडिया ने समाचार के साथ 'बहस' कार्यक्रम एवं नाटक इत्यादि के माध्यम से प्रस्तुति दी। सोशल मीडिया के द्वारा हमारे आंदोलन की गतिविधि को अपलोड किया गया। तो मैं यह कहूंगी कि इस आंदोलन में मीडिया की अति महत्वपूर्ण भूमिका थी।"

साक्षात्कार–नेशनल फेडरेशन ऑफ इण्डियन विमन, दिल्ली

"मीडिया ने इस आंदोलन में मैं समझती हूँ कि एक मील का पत्थर पार किया क्योंकि इस आंदोलन को संपूर्ण राष्ट्र में इस मुद्दे को पहुँचाया। मीडिया ने आंदोलन, राजनीति, देश के सिलिब्रिटी इत्यादि की टिप्पणी का प्रस्तुतीकरण इस प्रकार का था कि आम जन मानस घटना के प्रति रोष प्रकट हुआ। तथा यह एक राष्ट्रीय स्तर का आंदोलन बना। मैं इतना ही कहूंगी कि मीडिया ने अपनी भूमिका का बखूबी निर्वाह किया।"

साक्षात्कार–एडवा संस्था, दिल्ली

"मीडिया देश के प्रमुख स्तम्भ में से एक है, जो देश में होने वाली प्रत्येक घटना को जनता के समाने लेकर आती है। निर्भया आंदोलन में लोग जुड़े हुए थे, जबरदस्त प्रदर्शन भी किया जा रहा था। इतना बड़ा जन सैलाब सत्ता के विरूद्ध खड़ा था, जिसे मीडिया ने समझा एवं इसे अपने कार्यक्रमानुसार चाहे वो प्रिंट मीडिया हो या इलैक्ट्रोनिक हो या सोशल प्रत्येक ने आंदोलन से संबंधित घटना को दिखाया। मुझे लगता है कि मीडिया के माध्यम से घटना का राष्ट्रीयकरण किया गया जिसके माध्यम से यह आंदोलन सफल हो सका। मीडिया ने अपने उत्तरदायित्व का पूर्णतः निर्वाह इस आंदोलन में किया।"

साक्षात्कार–संस्था प्रतिनिधि, जागोरी, दिल्ली

विश्लेषण :

उपर्युक्त साक्षात्कारों से प्राप्त तथ्यों को विश्लेषित किया जाए तो यह स्पष्ट होता हैं कि निर्भया आंदोलन में मीडिया की भूमिका अहम् रही थी। जिसमें मीडिया के तीनों प्रकार प्रिंट मीडिया, इलैक्ट्रॉनिक मीडिया एवं सोशल मीडिया की भूमिका अहम रही थी। जिन्होंने अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह करते हुए मुद्दे को संवेदनशील किया और आम जन मानस को घटना से जोड़ा। नागरिक समाज के द्वारा किए जा रहे आंदोलन को चैनल एवं समाचार पत्र तथा सोशल मीडिया के माध्यम से जन–जन तक पहुँचाया। मीडिया द्वारा अपने समाचारों के प्रथम पृष्ठ, समाचार चैनलों के प्राइम टाइम एवं सोशल मीडिया के फेसबुक एवं यू–टयूब के माध्यम से

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

आमजन को इस आंदोलन से जोड़ने में अहम् भूमिका रही। इस घटना को जन आंदोलन बनाने में मीडिया ने एक महत्वपूर्ण कड़ी का कार्य किया।

यदि सामाजिक आंदोलन की सैद्धांतिकी में मीडिया की भूमिका की पड़ताल कि जाए तो यह स्पष्ट होता है कि मीडिया की सामाजिक उत्तरदायित्व का सिद्धांत प्रस्तुत आंदोलन में लागू होता है। जो समाज के प्रति मीडिया के उत्तरदायित्व पर जोर देता है उक्त आंदोलन में लागू होता है।

किसी भी प्रकार के आंदोलन चाहे वो सामाजिक आंदोलन हों अथवा राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन या नागरिक अधिकार आंदोलन। प्रत्येक आंदोलन के लिए संसाधन अति आवश्यक हैं जो धन सम्पदा पर आधारित होते हैं। जिसके बिना आंदोलन संभव नहीं हो सकता है। निर्भया आंदोलन भी वृहत स्तर संचालित हुआ। इस संदर्भ में शोधार्थी द्वारा यह जानने का भी प्रयास किया गया कि निर्भया आंदोलन के लिए धन सम्पदा कहाँ से प्राप्त हुई?

"देखिए!!! किसी भी आंदोलन के लिए संसाधन अतिआवश्यक होते हैं। निर्भया आंदोलन इससे थोड़ा अलग था, क्योंकि यह आंदोलन किसी जाति, धर्म अथवा किसी एक वर्ग से संबंधित नहीं था बल्कि स्वस्फूर्त आंदोलन था जिसमें सभी आंदोलनकारी अपने–अपने स्तर पर आंदोलन स्थल तक आए। सभी ने अपने–अपने स्तर पर ही खाने–पीने की भी व्यवस्था की। हमें किसी भी प्रकार की कोई धन सम्पदा की सहायता प्राप्त नहीं हुई।"

साक्षात्कार–एपवा संस्था, दिल्ली

"हमें फडिंग मिलना तो बहुत ही दूर की बात है, हमारे कार्यकर्ता स्वयं के वेतन खर्च करके आंदोलन स्थल तक गए।, सभी लोगों ने अपने घरों से खाने–पीने की व्यवस्था की, जिसे सभी आंदोलनकारियों ने आपस में बाँटकर खाया। जहाँ तक हमारे स्वयं की संस्था का प्रश्न है तो हमारे यहाँ पत्रिका इत्यादि की सदस्यता शुल्क से लिया जाता है और वर्तमान में संस्था को अपने कार्यालय का खर्च उठाने में भी कठिनाई का सामना करना पड़ रहा है।"

साक्षात्कार–नेशनल फैडरेशन ऑफ इण्डियन विमन, दिल्ली

"दिल्ली में जो बालिका के साथ घटना घटित होती है उस समय हमारी संस्था के 18 दिसम्बर से दिल्ली से बाहर कार्यक्रम में थे, किन्तु घटना के बारे में हमें जैसे ही पता चला हमने सारे कार्यक्रम स्थगित किए और 'निर्भया' के लिए लड़ाई लड़नी शुरू की। हमने स्लोगन रिकार्ड किए, लोगों को इस आंदोलन से जोड़ने के लिए कार्यकर्ताओं की टीम तैयार की, जो अपने–अपने स्तर पर लोगों तक पहुँचे और आंदोलन से जोड़ा। इसके लिए संस्था ने स्वयं के धन सम्पदा से ही यह कार्यक्रम तैयार किया हमें किसी भी स्तर पर किसी प्रकार की कोई सहायता प्राप्त नहीं हुई।

साक्षात्कार–एडवा संस्था, दिल्ली

"हमारी संस्था महिलाओं से जुड़ी अनेक परियोजनाओं के साथ कार्य कर रही है जिसमें प्रमुख रूप से दिल्ली सेफ्टी ऑडिट था जिनसे संस्था को परियोजना के तहत आय प्राप्त होती है, लेकिन संस्था को निर्भया आंदोलन के लिए कोई फडिंग नहीं हुई, बल्कि संस्था के आह्‌वान पर सभी साथी कार्यकर्ता और अन्य सहयोगी संस्थाओं की सहायता से इस आंदोलन में भाग लिया और अपने स्तर पर ही सारा कार्य किया।"

साक्षात्कार–जागोरी, प्रतिनिधि संस्था, दिल्ली

विश्लेषण :

उपर्युक्त तथ्यों को विश्लेषित किया जाए तो यह स्पष्ट होता है कि निर्भया आंदोलन में जिन संस्थाओं ने भाग लिया, उन संस्थाओं को संस्थाएँ किसी के द्वारा फडिंग नहीं की गई थी, बल्कि उन्होंने स्वयं के स्तर से संसाधनों को इकट्ठा किया गया जिसका उपयोग निर्भया आंदोलन के लिए किया गया। यह आंदोलन स्वस्फुर्त था, लोग अपने घरों से खाने–पीने की व्यवस्था कर रहे थे। यहाँ तक की आंदोलन स्थल तक भी स्वयं के संसाधन से पहुँच रहे थे।

जबकि संसाधन लामबंदी सिद्धांत की मान्यता यह है कि किसी भी आंदोलन के लिए संसाधन होना आवश्यक है, जिसमें ज्ञान, धन सम्पदा, मीडिया एवं आंदोलनकारियों की एकता है, उपर्युक्त में प्रमुख रूप से धन सम्पदा अहम भूमिका का निर्वाह करता है। किन्तु प्रस्तुत अध्ययन में मीडिया, ज्ञान एवं आंदोलनकारी एकता को तो शामिल किया जा सकता है, किन्तु 'धन सम्पदा' का कोई योगदान देखने को नहीं मिलता। अतः यह कहा जा सकता है कि यह आंदोलन स्वस्फूर्त या धन सम्पदा किसी के द्वारा प्रायोजित नही बल्कि स्वयं के विवेक के आधार पर नियोजित की गई थी। अतः इस सिद्धांत के आलोक में उक्त आंदोलन को मुख्यांकित किया जाए तो स्पष्ट होता है कि निर्भया आंदोलन पर यह पूर्ण रूप से लागू नहीं किया जा सकता।

नागरिक समाज को सत्ता की नीति, निर्णय, अधिनियम अथवा सामाजिक घटना के लिए आंदोलन को उपकरण के रूप में उपयोग किया जाता है। प्रत्येक आंदोलन के साथ नेतृत्व भी जुड़ा होता है। चाहे वो आंदोलन परम्परागत आंदोलन हो अथवा आधुनिक या उत्तर आधुनिक आंदोलन। आंदोलन प्रायः नेतृत्व के इर्द–गिर्द ही संचालित या संचरित होता है। कई–कई बार तो नेतृत्वकारी व्यक्तित्व के आधार पर ही आंदोलन का नामकरण हो जाता है। प्रस्तुत अध्ययन में

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

शोधार्थी ने 'निर्भया आंदोलन' में नेतृत्व था अथवा नहीं इसकी भी पड़ताल की।

प्रत्येक आंदोलन में कोई न कोई नेतृत्व अवश्य होता है, निर्भया आंदोलन में भी क्या नेतृत्व था, यदि हाँ तो किस के द्वारा नेतृत्व प्रदान किया गया?

''देखिए!!! हम लोगों को न तो निर्भया आंदोलन से कोई राजनैतिक धरातल तैयार करना था, जैसा की पूर्व के कुछ आंदोलन में हुआ था। हम तो केवल निर्भया के न्याय के लिए लड़ रहे थे, हम महिलाओं की बेखौफ आजादी के लिए लड़ रहे थे। सभी लोग एकजुट होकर अपना–अपना कार्य कर रहे थे तथा निर्णय सामूहिक रूप से आंदोलन स्थल पर ही लिए जा रहे थे। इसमें सर्वमत से निर्णय लिया जाता था। किसी एक व्यक्ति विशेष का निर्णय नहीं था, सभी का था। अतः किसी प्रकार का वहाँ कोई नेतृत्व विद्यमान नहीं था।''

साक्षात्कार–एपवा संस्था, दिल्ली

''निर्भया आंदोलन में सभी संगठनों के द्वारा अपने–अपने स्तर पर कार्य कर रहे थे, सभी का उद्देश्य निर्भया को न्याय दिलाना था, जहाँ तक नेतृत्व का सवाल है मुझे लगता है कि ये ''सामूहिक निर्णय'' के आधार पर संचालित था जो भी निर्णय लिए गए वो खुले मंच से लिए गए किसी की राय को नजरअंदाज नहीं किया गया, बल्कि समयानुकूल सभी की राय को आंदोलन में शामिल किया गया।

साक्षात्कार–एडवा संस्था, दिल्ली

''निर्भया आंदोलन में विश्वविद्यालय के छात्रों ने अहम रूप से भाग लिया था, विश्वविद्यालय परिसर में छात्र संघ नेताओं ने जरूर आंदोलन स्थल के लिए कार्य किया, लेकिन आंदोलन स्थल पर सभी के साथ अपनी योजना पर चर्चा करके ही लागू किया गया सभी संगठनों ने समन्वय करते हुए आंदोलन योजना को लागू किया गया, इसमें कोई व्यक्ति विशेष का कोई नेतृत्व नहीं था।''

साक्षात्कार–नेशनल फेडरेशन ऑफ विमन, दिल्ली

''हमारे संगठन में सभी निर्णय, निर्णायक मण्डल के माध्यम से लिए जाते थे, जिसमें कोई भी गतिविधि जिसके नेतृत्व में किया जा रहा है, ऐसा निर्णय लिया जाता था, किन्तु निर्भया आंदोलन में हमारी संस्था ने प्रदर्शनकारी के रूप में भाग लिया हालांकि हमारे शीर्ष नेताओं ने परामर्श के रूप में आंदोलन में भाग लिया था। जिसमें सभी निर्णय सामूहिक रूप से लिए गए।''

साक्षात्कार–जागोरी संस्था प्रतिनिधि, दिल्ली

विश्लेषण :

उपर्युक्त तथ्यों के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि निर्भया आंदोलन में भाग लेने वाले स्वैच्छिक संगठनों के प्रतिनिधियों के नेतृत्व संबंधी विचारों कि निर्भया आंदोलन में विशेष रूप कोई नेतृत्व नहीं था जो भारतीय परिदृश्य में आंदोलन के संदर्भ में एक 'नवाचार' है ऐसा सामान्यतः आंदोलनों में कम देखा जाता है। प्रत्येक आंदोलन में नेतृत्व अहम् रहा है चाहे स्वतंत्रता आंदोलन हो या जयप्रकाश नारायण आंदोलन अथवा अन्ना हजारे आंदोलन। इन सभी में नेतृत्व की अहम भूमिका निभा रही है।

उक्त संदर्भ में नेतृत्व सैद्धांतिकी इस तथ्य की पुष्टि करता है कि प्रत्येक आंदोलन में नेतृत्व आवश्यक है बिना नेतृत्व के कोई आंदोलन अपने उद्देश्यों की पूर्ति करने में सफल नहीं हो सकता है लेकिन निर्भया आंदोलन पर नेतृत्व का सिद्धांत लागू नहीं होती के संदर्भ में निर्णय स्थापित करने हेतु यह एक स्वस्फूर्त आंदोलन था।

संदर्भ सूची

1. Mihir. S (2014) *Civil Society and Indian Democracy* : *Economic & Political Weekly*, *46 (39) 32-37.*
2. Singh,R. (2013) *Civil Society and Policy making in India : in search of Democratic spaces A case study*, India: Oxfam. https://www.oxfamindia.org/sites/default/files/WP7-Civil-Scty-n-plcy-mkg-in-India.pdf
3. Baviskar, B.S. (2001) *NGOs and Civil Society in India*, Sociological Bulletin Sociological Bulletin,Sage,50(1)3-15
4. रीना सोनोवाल कौली (2011 नवम्बर), **योजना,** गैर सरकारी संगठन, : प्रकाशन विभाग, भारत सरकार

© RRIJM 2015, All Rights Reserved